डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

साहित्य अकादेमी द्वारा स्वतंत्रता की सीमाएँ विषय पर परिसंवाद संपन्न

हमारी स्वतंत्रता वहीं समाप्त होती है जहाँ से दूसरे की स्वतंत्रता शुरू होती है – हरीश त्रिवेदी

ज़िम्मेदारी और जागरूकता का बोध ही असली स्वतंत्रता – ए. पी. माहेश्वरी

नई दिल्ली। 15 अगस्त 2018। साहित्य अकादेमी ने स्वतंत्रता दिवस के विशेष अवसर पर 'स्वतंत्रता की सीमाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया। इस परिसंवाद में विभिन्न अनुशासनों के विद्वानों ने सहभागिता की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित विद्वान, आलोचक एवं अनुवादक प्रो. हरीश त्रिवेदी ने विभिन्न लेखकों के उद्धरणों के माध्यम से कहा कि स्वतंत्रता की परिकल्पना सभी ने अलग अलग तरह से की है। कहीं यह परिकल्पना बहुत व्यापक महसूस होती है तो कहीं बहुत सीमित। उन्होंने ग़ालिब और रवींद्रनाथ टैगोर को याद करते हुए कहा कि उनसे हमें व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। श्री हरीश त्रिवेदी ने सभी की स्वतंत्रता का सम्मान करने और उसके लिए जागरूक रहने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारी स्वतंत्रता वहीं समाप्त होती है जहाँ से दूसरे की स्वतंत्रता शुरू होती है।

पुलिस सेवा से संबद्ध श्री ए.पी. माहेश्वरी ने कहा कि दूसरों के अस्तित्व के ऊपर किसी भी तरह की स्वतंत्रता की इमारत खड़ी नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि दूसरों के विचारों से सहमति और असहमति हो सकती है और यह स्थिति ही विकास में सहायक होती है, इसलिए हमें स्वतंत्रता के प्रति जागरूक और ज़िम्मेदार बनना पड़ेगा। हर किसी को उसकी क्षमता और श्रम के अनुसार स्थान मिलना ही वास्तविक स्वतंत्रता है। इसीलिए स्वतंत्रता को समग्र दृष्टि से देखना आवश्यक है।

हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार और विद्वान डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने प्रेमचंद की पुस्तक 'सोज़े वतन' का ज़िक्र करते हुए कहा कि हमें अपनी स्वतंत्रता की खुशी ज़रूर मनानी चाहिए लेकिन विभाजन से जो हमें पीड़ा पहुँची थी, हमने अपनों को खोया था, उस भीषण दुख–दर्द को भी भूलना नहीं चाहिए। इस द्वंद्व के बीच में ही हम अपनी स्वतंत्रता का सही उत्तरदायित्व के साथ अर्थ पहचान सकते हैं।

हिंदी के चर्चित लेखक, वरिष्ठ पत्रकार और संपादक श्री आलोक मेहता ने कहा कि हम अपनी स्वतंत्रता का आनंद लें यह तो ठीक है लेकिन किसी अन्य की स्वतंत्रता का हनन करने का हमें अधिकार नहीं है। इसलिए हमें अपने लिए आचार–संहिता भी निर्धारित करनी चाहिए। उन्होंने

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

Scanned by CamScanner

पत्रकारिता की उस परंपरा का उल्लेख किया जिसमें गणेश शंकर विद्यार्थी ने उच्च जीवनमॅलयों के साथ साथ पत्रकारिता का उत्तरदायित्व और गंभीरता को पूरी निष्ठा से निभाया था। उन्होंने मीडिया की भाषा पर प्रश्नचिन्ह खड़े किए।

चर्चित पत्रकार और समाजसेवी सुश्री अंतरा देव सेन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अक्सर यही देखा जाता रहा है कि अधिक शक्तिशाली लोगों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है और कम शक्ति वाले व्यक्ति को कम स्वतंत्रता मिली हुई है, जबकि हम संविधान और लोकतंत्र के अंतर्गत जीवन जीते हैं, यह स्थिति क्यों है और इसे किसने बनाया है, इस पर हमें गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। अन्यों की स्वतंत्रता की रक्षा और सम्मान का भाव ही हमारी अपनी स्वतंत्रता को सही स्वरूप प्रदान करता है।

भारत में मैला ढोने की प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रभावशाली मुहिम चलाने वाले प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता श्री बेज़वाडा विल्सन ने नागरिक की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की बात उठाते हुए कहा कि अब भी हाथ से मैला ढोने वाले लोगों की हमारे देश में स्थिति गंभीर बनी हुई है, उसके बारे में हमें चिंतित होना चाहिए और इसे दूर करने के लिए हमें प्रयास करने चाहिए। तभी देश में सभी का विकास और सम्मान प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने कहा कि जब तक देश के नागरिक को संविधानसम्मत अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं तब तक उन नागरिकों के लिए आज़ादी अधूरी है।

प्रख्यात विदुषी प्रो. मधु किश्वर ने कहा कि पुलिस और क़ानून के बजाय हमें अपनी सामाजिक जागरूकता से अपनी स्वतंत्रता की सीमाएँ तय करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे पारिवारिक और सामाजिक संस्कार ही वह अनुशासन बनाते थे जिनसे हम दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होते थे और उनकी भावनाओं का सम्मान भी कर पाते थे।

प्रतिष्ठित लेखक, संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार ओंकारेश्वर पांडेय ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही सभी तरह की स्वतंत्रताओं का मूल है। उन्होंने कहा कि किसी भी घटना या विचार की प्रस्तुति करते समय मीडिया को खुद ही स्व–नियंत्रण करना होगा। मीडिया को अपनी सीमाओं का बोध होना चाहिए जिससे कि ग़लत और भ्रम की स्थिति उत्पन्न न हो और सामाजिक सौहार्द का वातावरण बना रहे।

प्रख्यात स्तंभकार और प्रशासक श्री प्रणव खुल्लर ने कहा कि हमें वेदांत के सूत्रों से सीख लेने की आवश्यता है जिसमें व्यक्ति, समाज और देश की स्वतंत्रता का वृहद स्वरूप मिलता है। उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में सार्वभौम स्वतंत्रता के खुले गवाक्ष हमें वैचारिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं, जिनमें सभी के मंगल की कामना की गई है।

प्रतिष्ठित लेखिका, आलोचक तथा साहित्येतिहासकार सुश्री रख़्शंदा जलील ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में विचारों की स्वतंत्रता की वकालत की और कहा कि हमें स्वयं सोचना चाहिए कि किसी बात से किसी अन्य को कष्ट तो नहीं हो रहा, इसका ख़्याल भी बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि व्यंग्य और हास्य की भी एक सीमा होनी चाहिए जिससे कि कोई भी समुदाय या धर्मावलंबी आहत न हो।

Scanned by CamScanner

हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार और दलित चिंतक प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन ने बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के तीन सिद्धांतों – शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित बनो – का मर्म समझाते हुए इस बात पर चिंता भी प्रकट की कि प्राथमिक शिक्षा में भारी गिरावट आई है। कमज़ोर तबके के बच्चे और उच्च आयवर्ग के बच्चों की शिक्षा में जो असंतुलन और असमानता है वह आगे चल कर बड़े दुराव और अलगाव का कारण बनती है। इस ओर हमें गंभीर होना चाहिए तभी हम प्रत्येक के लिए स्वतंत्रता को सही रूप में निर्धारित कर सकेंगे।

अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक श्री सुदीप सेन ने कई विद्वानों की रचनाओं के माध्यम से कहा कि हमें सही के पक्ष में बोलने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और इसमें हमें ज़िममेदारी का बोध भी होना चाहिए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का अंगवस्त्रम् प्रदान कर स्वागत करते हुए कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता की सीमाएँ अलग अलग अनुशासनों में अलग अलग होती हैं लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि रखते हुए हमें इन सीमाओं को तय करना चाहिए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी और छात्र उपस्थित थे।

(के. श्रीनिवासराव)

Scanned by CamScanner